

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ नौ

भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोग का अनावरण: प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय का भविष्यसूचक महत्त्व और आधुनिक सुधारवादी आंदोलन

Jeff Pippenger

2024-03-01

प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय का पहला भाग पाँचवें नरसिंगे की पहचान करता है, जो पहली हाय है, और अध्याय का दूसरा भाग छठे नरसिंगे की पहचान करता है, जो दूसरी हाय है। दोनों नरसिंगों को 1843 और 1850 के अग्रदूत चार्टों पर चित्रात्मक रूप से दर्शाया गया है। जब 1989 में सोवियत संघ के पतन के साथ अन्त के समय में दानियेल ग्यारह के अंतिम छह पदों की मुहर खुल गई, तब एक लाख चवालीस हजार का सुधार आंदोलन आरंभ हुआ।

1989 में पहचाने गए सत्यों में यह भी शामिल था कि बाइबिलीय इतिहास के महान सुधार आंदोलन एक-दूसरे के समानांतर चलते हैं। सभी भविष्यद्वक्ता, और इस प्रकार हर पवित्र इतिहास—पवित्र सुधार आंदोलनों सहित—एक लाख चवालीस हजार के अंतिम महान सुधार आंदोलन का चित्रण करते हैं, जो तीसरे स्वर्गदूत का शक्तिशाली आंदोलन भी है। जब मुहर लगाने की प्रक्रिया आरंभ होती है, उसी समय अंतिम वर्षा की फुहारें भी आरंभ हो जाती हैं। 1989 में सुधार आंदोलनों की मुहर खोले जाने के बाद, और 1992 में दानियेल अध्याय 11 की अंतिम छह आयतों की मुहर खोले जाने के साथ, विरोध का एक वातावरण उत्पन्न हुआ, जैसा कि हमेशा होता है जब किसी नए और वर्तमान सत्य की मुहर खोली जाती है।

जब दानियेल ग्यारह के अंतिम छह पदों के सत्य का विरोध हुआ, तब प्रभु ने यह सत्य खोला कि मूर्तिपूजक रोम का भविष्यसूचक इतिहास, पापाई रोम के भविष्यसूचक इतिहास के साथ मिलकर, जो दो गवाहों के आधार पर स्थापित है, आधुनिक रोम के भविष्यसूचक इतिहास की पहचान करता है। भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोग के नियम को पहचाना गया, और इसके बाद उसे त्रुटि के विरुद्ध बचाव करने तथा सत्य की पहचान और स्थापना के लिए प्रयुक्त किया गया। वे नियम, जो यह प्रतिपादित करते हैं कि सुधार की हर रेखा अन्य सुधार-रेखाओं के समांतर चलती है, और भविष्यवाणी के तिहरे अनुप्रयोग से संबंधित नियम, तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में स्थापित नियमों की आधारशिला बन गए, जैसा कि मिलराइट इतिहास में स्थापित, प्रयुक्त और प्रकाशित नियमों द्वारा प्रतिरूपित किया गया था।

भविष्यवाणी के त्रिगुण अनुप्रयोग को एक नियम के रूप में, एक लाख चवालीस हजार के आंदोलन के लिए उद्धाटित किया गया, क्योंकि वे अन्तिम वर्षा का आंदोलन हैं, और तीसरी विपत्ति का इस्लाम अन्तिम वर्षा का संदेश है। भविष्यवाणी के त्रिगुण अनुप्रयोग के सिद्धान्त की पहचान यहूदा के गोत्र के सिंह ने, इतिहास में 11 सितंबर, 2001 को तीसरी विपत्ति का इस्लाम आने से बहुत पहले ही कर दी थी, क्योंकि वह चाहता था कि जब वह अपने लोगों को यिर्मयाह के पुराने मार्गों पर लौटाए, तब उसके अन्तिम दिनों के लोग तीसरी विपत्ति के आगमन से दर्शाए गए संदेश को सहज ही पहचान लें।

प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ में प्रस्तुत पाँचवीं और छठी तुरही की अग्रणी समझ को प्रकाशितवाक्य के उस खंड के रूप में समझा गया था जिसे इतिहास ने सबसे दृढ़ और स्पष्ट समर्थन दिया था। यूरायाह स्मिथ अपनी प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ की प्रस्तुति की शुरुआत इतिहासकार कीथ के शब्दों का उपयोग करके ठीक उसी बात को स्थापित करने के लिए करते हैं।

"इस तुरही की व्याख्या के लिए, हम फिर से श्री कीथ की रचनाओं का सहारा लेंगे। यह लेखक सच्चाई से कहता है: 'प्रकाशितवाक्य के किसी अन्य भाग के विषय में व्याख्याकारों में इतनी एकरूप सहमति शायद ही कहीं मिलती है, जितनी पाँचवीं और छठी तुरही, अथवा पहली और दूसरी विपत्ति, को सरासेनों और तुर्कों पर लागू

करने के विषय में पाई जाती है। यह इतना स्पष्ट है कि इसे गलत समझना मुश्किल है। प्रत्येक को केवल एक-दो पदों से निर्दिष्ट करने के बजाय, प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय का समूचा भाग समान हिस्सों में दोनों के वर्णन से भरा हुआ है।" उरियाह स्मिथ, दानियेल और प्रकाशितवाक्य, 495.

पहली और दूसरी विपत्तियों का अध्याय-विभाजन, पहली विपत्ति के इतिहास—जिसका प्रतिनिधित्व मोहम्मद करते हैं—को अलग करता है। इसे भौगोलिक रूप से उस क्षेत्र में रखा गया है जिसे इतिहासकार अलेक्जेंडर कीथ "सरासेन" कहते हैं, जिसे हम आज अरब कहते हैं। दूसरी विपत्ति का इतिहास—जिसका प्रतिनिधित्व उस्मान प्रथम करते हैं—भौगोलिक रूप से तुर्की में स्थित है, जिसे इतिहासकार "तुर्क" के रूप में पहचानते हैं। पहली विपत्ति का इतिहास अरब में स्थित था और वहीं पूरा हुआ, जो इस्लाम और मोहम्मद की जन्मभूमि है। दूसरी विपत्ति का इतिहास तुर्की में स्थित था और वहीं पूरा हुआ, जो उस्मानी साम्राज्य की जन्मभूमि है।

पहली 'विपत्ति' का इतिहास उस युद्ध का वर्णन करता है जो स्वतंत्र योद्धाओं द्वारा रोम के विरुद्ध लड़ा गया, जिनका आपस में एकमात्र साझा बंधन इस्लाम धर्म था। दूसरी 'विपत्ति' का इतिहास उस युद्ध का वर्णन करता है जो एक संगठित धार्मिक तथा राज्य सत्ता—जिसे खिलाफत कहा जाता है—द्वारा रोम के विरुद्ध किया गया। दोनों ही स्थितियों में—चाहे मोहम्मद द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए इतिहास में रोम के विरुद्ध स्वतंत्र युद्ध रहा हो, या ऑटोमन, अर्थात् ऑटोमन साम्राज्य, द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए इतिहास में संगठित युद्ध—युद्ध की शैली अचानक और अप्रत्याशित आक्रमण की थी। यह ऐसा युद्ध नहीं था जिसमें सभी सैनिकों को एक ही रंग की वर्दियाँ पहनाकर, उन्हें पंक्तिबद्ध किया जाए और उस समय की सैन्य प्रथा के अनुसार गोलियों की बौछार की ओर मार्च कराया जाए। 'assassin' शब्द अचानक और अप्रत्याशित प्रहार करने की इस्लामी युद्ध-रीति पर आधारित है, और अक्सर हमलावर की भी मृत्यु हो जाती थी।

"असैसिन" शब्द अरबी शब्द "हशशाशीन" से व्युत्पन्न है, जो "हशीश" से आया है, जिसका अर्थ "हशीश" या "कैनाबिस" है। यह शब्द मूल रूप से मध्यकाल में मध्य पूर्व के निज़ारी इस्माइली मुसलमानों के एक गुप्त और कट्टर समूह के लिए प्रयोग किया जाता था। इस समूह के सदस्य अपने अपरंपरागत और अक्सर हिंसक तरीकों के लिए जाने जाते थे, जिनमें अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए राजनीतिक हत्याएँ करना भी शामिल था। कहा जाता है कि वे कभी-कभी अपने मिशनों की तैयारी के लिए हशीश का सेवन करते थे, जिससे पश्चिमी दुनिया में "हशशाशीन" या "असैसिन" शब्द का प्रचलन हुआ। असैसिन मध्यकाल के दौरान मुख्यतः फ़ारस और सीरिया में सक्रिय थे, और उस समय के विभिन्न राजनीतिक संघर्षों और हत्याओं में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंततः "असैसिन" शब्द यूरोपीय भाषाओं में भी पहुँच गया, जहाँ इसका अर्थ व्यापक होकर उन व्यक्तियों के लिए होने लगा जो राजनीतिक या लक्षित हत्याएँ करते हैं।

युद्ध की यह शैली तीन हायों की एक महत्वपूर्ण भविष्यसूचक विशेषता है, क्योंकि इस्लाम की भविष्यसूचक भूमिका युद्ध उत्पन्न करना है। प्रतीक के रूप में इस्लाम पूरी तरह युद्ध से संबंधित है, और प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ में प्रथम और द्वितीय हाय में वर्णित इस्लाम उनके युद्ध का एक चित्रण है। उनके युद्ध को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उस कार्य के रूप में पहचाना गया है जो अनुग्रहकाल समाप्त होने से ठीक पहले राष्ट्रों को क्रोधित करता है।

और राष्ट्र क्रोधित हो उठे, और तेरा क्रोध आ गया है, और मृतकों के न्याय का समय आ गया है, कि उनका न्याय किया जाए; और कि तू अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को, पवित्र जनों को, और जो तेरे नाम से डरते हैं, छोटे-बड़े सबको प्रतिफल दे; और जो पृथ्वी का नाश करते हैं, उनका नाश करे। प्रकाशितवाक्य 11:18.

"जातियाँ" "क्रोधित" कर दी जाती हैं, ठीक उससे पहले जब परमेश्वर का क्रोध आता है; और परमेश्वर का क्रोध, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्शाया गया है, उन अंतिम सात विपत्तियों के रूप में प्रकट होता है जो तब आती हैं जब मनुष्यों के लिए अनुग्रह काल समाप्त हो जाता है। उस पद में तीन मार्गचिह्न हैं: जातियों को क्रोधित किया जाना, परमेश्वर का क्रोध, और मृतकों का न्याय करने का समय। यहाँ जिस मृतकों के न्याय का उल्लेख है, वह दुष्ट मृतकों का न्याय है जो हजार-वर्षीय सहस्राब्दी के दौरान होता है, न कि वह मृतकों का जांच-पड़ताल का न्याय जो 22

अक्टूबर, 1844 को आरंभ हुआ था। सिस्टर व्हाइट स्पष्ट करती हैं कि इस पद के तीनों मार्गचिह्न भिन्न हैं और पद में जिस क्रम में दिए गए हैं, उसी क्रम में घटित होते हैं।

मैंने देखा कि राष्ट्रों का क्रोध, परमेश्वर का प्रकोप, और मरे हुएों का न्याय करने का समय, अलग और पृथक थे, एक के बाद दूसरा; यह भी कि मीकाएल अभी खड़ा नहीं हुआ था, और कि ऐसा क्लेश का समय, जैसा कभी नहीं हुआ, अभी प्रारम्भ नहीं हुआ था। राष्ट्र अब क्रोधित हो रहे हैं, परन्तु जब हमारा महायाजक पवित्रस्थान में अपना कार्य पूरा कर लेगा, तब वह खड़ा होगा, प्रतिशोध के वस्त्र धारण करेगा, और तब अंतिम सात विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी।

"मैंने देखा कि चार स्वर्गदूत चारों पवनों को तब तक रोके रखेंगे जब तक पवित्रस्थान में यीशु का कार्य पूरा न हो जाए, और तब सात अंतिम विपत्तियाँ आएँगी।" Early Writings, 36.

बाइबल की अंतिम पुस्तक में इस्लाम की भूमिका राष्ट्रों को क्रोधित करना है, और वे यह युद्ध के माध्यम से करते हैं। बाइबल की पहली पुस्तक में इस्लाम की भूमिका दुनिया के हर व्यक्ति का हाथ इस्लाम के विरुद्ध एक साथ करना है, जिसे इश्माएल के रूप में दर्शाया गया है।

और यहोवा के दूत ने उससे कहा, देख, तू गर्भवती है, और एक पुत्र उत्पन्न करेगी, और उसका नाम इश्माएल रखना; क्योंकि यहोवा ने तेरे दुःख को सुना है। और वह वनपुरुष होगा; उसका हाथ सब मनुष्यों के विरुद्ध, और सब मनुष्यों का हाथ उसके विरुद्ध होगा; और वह अपने सब भाइयों के सम्मुख निवास करेगा। उत्पत्ति 16:11, 12.

शब्द "हाथ" एक प्रतीक के रूप में, सभी बाइबिल प्रतीकों की तरह है, और जिस संदर्भ में इसका उपयोग किया जाता है उसके अनुसार इसके एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं। अधिकांशतः, बाइबिल की भविष्यवाणी में "हाथ" एक प्रतीक के रूप में युद्ध का प्रतीक है। "जंगली मनुष्य" के रूप में अनूदित हिब्रू शब्द वास्तव में अरबी जंगली गधे के लिए प्रयुक्त शब्द है, जिसके कई महत्वपूर्ण भविष्यवाणी-संबंधी निहितार्थ हैं; जिनमें से एक यह है कि अरबी गधा, घोड़े की तरह ही, प्राणियों के इक्विडाए परिवार का सदस्य है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय नौ में, और हबक्कुक के दोनों पवित्र चार्टों (1843 और 1850 के अग्रणी चार्ट) पर, घोड़े का उपयोग तीन "हाथ" से संबद्ध इस्लाम द्वारा प्रस्तुत युद्ध के प्रतीक के रूप में किया गया है। उत्पत्ति की पुस्तक और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इस्लाम का पहला और अंतिम उल्लेख, दोनों ही इस्लाम को इक्विडाए परिवार (गधा या घोड़ा) के प्रतीक से जोड़ते हैं, और दोनों इस बात पर बल देते हैं कि इस्लाम की भूमिका "हर मनुष्य" (राष्ट्रों) के लिए युद्ध लाना है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, अध्याय नौ, पद ग्यारह में, इस्लाम का चरित्र पहचाना गया है, क्योंकि भविष्यवाणी में चरित्र का प्रतिनिधित्व एक नाम से होता है। इस्लाम पर शासन करने वाले राजा को दिया गया नाम उत्पत्ति की पुस्तक में इस्लाम के पहले उल्लेख को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ लिखा है कि इश्माएल का चरित्र या आत्मा "अपने सब भाइयों के सामने निवास करेगा।" समूचे इस्लाम पर शासन करने वाला राजा इश्माएल की आत्मा (उनका राजा) है, जिसका हाथ "हर मनुष्य के विरुद्ध" है।

और उन पर एक राजा था, जो अथाह कुंड का स्वर्गदूत है, जिसका नाम इब्रानी भाषा में अबद्दोन है, पर यूनानी भाषा में उसका नाम अपोल्योन है। प्रकाशितवाक्य 9:11.

इब्रानी द्वारा प्रतिनिधित्वित पुराने नियम में हो या यूनानी द्वारा प्रतिनिधित्वित नए नियम में, इस्लाम धर्म के अनुयायियों पर शासन करने वाले उस चरित्र की पहचान या तो 'अबद्दोन' या 'अपोल्योन' के रूप में की जाती है, जो दोनों में 'मृत्यु और विनाश' का अर्थ रखते हैं। मृत्यु और विनाश इस्लाम का चरित्र हैं, चाहे वह पुराने नियम में प्रस्तुत हो या नए नियम में। इस्लाम के हर अनुयायी के भीतर शासन करने वाली आत्मा के विशिष्ट लक्षण—गधे या घोड़े के प्रतीक के संबंध में—इस्लाम के प्रथम और अंतिम संदर्भों के दोनों घटक हैं। ये दो भविष्यसूचक गुण अल्फा और ओमेगा का चिह्न धारण करते हैं। जब सिस्टर व्हाइट उस संदेश को, जो एक लाख चवालीस हज़ार को जीवन देता है, तीसरे स्वर्गदूत की

शक्तिशाली सेना के रूप में पहचानती हैं, तब वे निम्नलिखित कहती हैं:

“स्वर्गदूत चारों पवनों को थामे हुए हैं, जिन्हें उस क्रोधित घोड़े के रूप में दर्शाया गया है जो बंधन तोड़कर छूट जाने और समस्त पृथ्वी के ऊपर दौड़ पड़ने का प्रयत्न कर रहा है, तथा अपने मार्ग में विनाश और मृत्यु ले जाता है।

“क्या हम अनन्त संसार की ठीक देहलीज़ पर सोए रहेंगे? क्या हम सुस्त, शीतल और मृत बने रहेंगे? ओह, काश हमारी कलीसियाओं में परमेश्वर का आत्मा और श्वास उसके लोगों में फूँका जाए, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हों और जीवित रहें। हमें यह देखने की आवश्यकता है कि मार्ग सँकरा है, और फाटक तंग है। परन्तु जब हम उस तंग फाटक से होकर प्रवेश करते हैं, तो उसकी विशालता असीम होती है।” Manuscript Releases, volume 20, 217.

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के दौरान चारों हवाओं को रोके रखा जाता है, और ये चारों हवाएँ एक "क्रोधित घोड़े" के समान हैं, जो अपने मार्ग में "मृत्यु और विनाश" लेकर चलता है। 11 सितम्बर 2001 को तीसरी विपत्ति भविष्यसूचक इतिहास में प्रवेश कर गई, "मृत्यु और विनाश" लाती हुई, और इस प्रकार "राष्ट्रों को क्रोधित" कर दिया, जब उसने आध्यात्मिक महिमामय देश पर "अचानक और अप्रत्याशित रूप से" प्रहार किया। 7 अक्टूबर 2023 को, तीसरी विपत्ति अपने "मृत्यु और विनाश" के मार्ग पर आगे बढ़ती रही, और जब उसने वास्तविक महिमामय देश पर "अचानक और अप्रत्याशित रूप से" हमला किया, तो उसने "राष्ट्रों को और अधिक क्रोधित" कर दिया। पहला अप्रत्याशित हमला एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी की अवधि की शुरुआत को चिह्नित किया, और 7 अक्टूबर 2023 का हाल का हमला एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी के समाप्ति काल, या "binding off," की शुरुआत को चिह्नित करता है। क्या हम अनन्त जगत की देहलीज़ पर ही सोए रहेंगे?

दोनों पवित्र अग्रणी चार्टों में, पहली और दूसरी विपत्ति के संदर्भ में इस्लाम को युद्धघोड़ों पर सवार इस्लामी योद्धाओं द्वारा चित्रात्मक रूप से दर्शाया गया है। दोनों चित्रों में पहली विपत्ति के युद्धघोड़े का सवार भाला लिए हुए है, और दूसरी विपत्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले घोड़े का सवार राइफल चला रहा है। यह भेद स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ में पहचाना गया है, क्योंकि दूसरी विपत्ति के इतिहास में ही बारूद का आविष्कार हुआ और पहली बार युद्ध में उसका उपयोग किया गया। प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ के सत्रह से उन्नीस पदों पर टिप्पणी करते हुए, उरियाह स्मिथ ने निम्नलिखित दर्ज किया है:

इस वर्णन का पहला भाग संभवतः इन घुड़सवारों की दिखावट का संदर्भ देता है। अग्नि, जो एक रंग का संकेत है, लाल का प्रतीक है; 'अग्नि के समान लाल' एक प्रचलित अभिव्यक्ति है; जेसिंथ, या हायसिंथ, नीले का, और गंधक पीले का प्रतीक हैं। और ये रंग इन योद्धाओं की पोशाक में बहुत अधिक प्रमुख थे; अतः इस दृष्टि से यह वर्णन तुर्की वर्दी पर ठीक-ठीक लागू बैठता है, जो मुख्यतः लाल या सुर्ख, नीले और पीले रंगों से बनी थी। घोड़ों के सिर देखने में शेरों के सिर जैसे थे, जिससे उनकी शक्ति, साहस और उग्रता का संकेत मिलता था; जबकि पद का अंतिम भाग निस्संदेह युद्ध के उद्देश्यों के लिए बारूद और आग्नेयास्त्रों के उपयोग का संदर्भ देता है, जो तब अभी-अभी प्रचलन में आए थे। क्योंकि तुर्क घोड़े पर सवार होकर अपने आग्नेयास्त्र चलाते थे, इसलिए दूर से देखने वाले को ऐसा प्रतीत होता था मानो आग, धुआँ और गंधक घोड़ों के मुँह से निकल रहे हों, जैसा कि साथ दिए गए चित्र में दर्शाया गया है।

कॉनस्टेंटिनोपल के विरुद्ध अपने अभियान में तुर्कों द्वारा आग्नेयास्त्रों के उपयोग के संदर्भ में, एलियट (Horae Apocalypticæ, Vol. I, pp. 482-484) इस प्रकार कहते हैं:- 'यह "आग, धुआँ और गंधक," अर्थात् महोमेट के तोपखाने और आग्नेयास्त्र ही थे, जिनके कारण मनुष्यों के तीसरे हिस्से की हत्या—यानी कॉनस्टेंटिनोपल पर अधिकार—और उसके परिणामस्वरूप ग्रीक साम्राज्य का विनाश, संभव हुआ। कॉनस्टेंटाइन द्वारा इसकी स्थापना हुए अब ग्यारह सौ वर्ष से अधिक बीत चुके थे। इन वर्षों के दौरान गोथ, हूण, आवार, फ़ारसी, बुल्गार, सरासेन, रूसी, और वास्तव में स्वयं उस्मानी तुर्कों ने, उस पर शत्रुतापूर्ण आक्रमण किए, या उस पर घेरा डाला। पर उसकी किलेबंदियाँ उनके लिए अभेद्य थीं। कॉनस्टेंटिनोपल बचा रहा, और उसके साथ ग्रीक

साम्राज्य भी। अतः सुल्तान महोमेट इस बाधा को दूर करने वाला उपाय खोजने को व्याकुल था। "क्या तुम एक तोप ढाल सकते हो," यह उसका प्रश्न था उस तोप-निर्माता से जो उसके पास आ मिला, "जो आकार में इतनी बड़ी हो कि कॉनस्टैंटिनोपल की दीवार को ढहा दे?" तब एड्रियानोपल में ढलाईखाना स्थापित किया गया, तोप ढाली गई, तोपखाना तैयार हुआ, और घेराबंदी शुरू हुई।'

यह बात ध्यान देने योग्य है कि गिबन, जो सदा प्रलय-संबंधी भविष्यवाणी के अनजाने व्याख्याकार रहे हैं, अपने प्रभावशाली और सशक्त वर्णन में, जिसमें वह यूनानी साम्राज्य की अंतिम विपत्ति का चित्र खींचते हैं, युद्ध के इस नए साधन को अपने चित्र की अग्रभूमि में रख देते हैं। इसके लिए तैयारी के रूप में वह बारूद के हाल के आविष्कार का इतिहास देता है—'शोरा, गंधक और कोयले का वह मिश्रण;'—उसके सुल्तान अमूरत द्वारा पहले के उपयोग का जिक्र करता है, और, जैसा पहले कहा, एड्रियनोपल में मोहम्मद के बड़ी तोपों के ढलाई-कारखाने का भी; फिर, घेराबंदी की प्रगति में, वह बताता है कि कैसे 'भालों और तीरों की बौछारें बंदूकबाज़ी और तोपों के धुएँ, ध्वनि और आग के साथ थीं;' कैसे 'तुर्की तोपखाने की लंबी पंक्ति दीवारों की ओर तनी हुई थी, चौदह बैटरियाँ एक साथ सबसे सुलभ स्थानों पर गरज रही थीं;' कैसे 'वह किलेबंदियाँ जो शत्रु-हिंसा के विरुद्ध युगों तक खड़ी रही थीं, उस्मानी तोपों से चारों ओर से ध्वस्त कर दी गई, अनेक दरारें खोल दी गई, और सेंट रोमानुस के फाटक के पास चार बुर्जों को ज़मीन के समतल कर दिया गया;' कैसे, जब 'मोर्चों, युद्ध-नौकाओं और पुल से उस्मानी तोपखाना चारों ओर गरज रहा था, तब छावनी और नगर, यूनानी और तुर्क, धुएँ के ऐसे बादल में घिर गए थे, जो केवल रोमन साम्राज्य की अंतिम मुक्ति या विनाश से ही छट सकता था;' कैसे 'दोहरी दीवारों को तोपों ने मलबे के ढेर में बदल दिया;' और कैसे अंततः तुर्क 'दरारों से ऊपर चढ़ते हुए,' 'कॉनस्टैंटिनोपल को वश में कर गए; उसका साम्राज्य उलट दिया गया, और उसके धर्म को मुस्लिम विजेताओं ने धूल में रौंद डाला।' मैं कहता हूँ, यह ध्यान देने योग्य है कि गिबन कितनी स्पष्टता और प्रभाव के साथ नगर की विजय—और इस प्रकार साम्राज्य के विनाश—को उस्मानी तोपखाने का परिणाम ठहराते हैं। क्योंकि यह और क्या है सिवाय हमारी भविष्यवाणी के शब्दों पर एक टिप्पणी के? 'इन तीनों के द्वारा मनुष्यों का तीसरा भाग मारा गया—उस आग, उस धुएँ और उस गंधक के द्वारा, जो उनके मुँह से निकलती थी।'

'पद 18. इन तीनों से मनुष्यों का एक-तिहाई भाग मारा गया: आग, धुएँ और गंधक से, जो उनके मुँह से निकलते थे। 19. क्योंकि उनकी शक्ति उनके मुँह में और उनकी पूँछों में है; क्योंकि उनकी पूँछें सर्पों के समान थीं, और उनमें सिर थे, और उन्हीं से वे हानि पहुँचाते हैं।'

ये पद प्रवर्तित नई युद्ध-पद्धति के घातक प्रभाव को व्यक्त करते हैं। इन्हीं साधनों—बारूद, आग्नेयास्त्र और तोपों—के माध्यम से अंततः कॉनस्टैंटिनोपल पराजित किया गया, और उसे तुर्कों के हाथों में सौंप दिया गया। यूरायाह स्मिथ, डैनियल एंड रिवेलेशन, 510-514.

हम तीसरी विपत्ति का अध्ययन अगले लेख में जारी रखेंगे।

कल रात मेरी नींद खुली तो मन पर एक भारी बोझ था। मैं हमारे भाइयों और बहनों को एक संदेश दे रहा था, और वह संदेश उन कुछ लोगों के कार्य के संबंध में चेतावनी तथा निर्देश का था, जो पवित्र आत्मा को ग्रहण करने के विषय में और उसके मानवीय माध्यमों के द्वारा कार्य करने के संबंध में त्रुटिपूर्ण सिद्धांतों का समर्थन कर रहे हैं।

मुझे यह निर्देश दिया गया था कि 1844 में समय बीत जाने के बाद जिसका सामना करने के लिए हमें बुलाया गया था, उसी प्रकार की धर्मांधता संदेश के समापन के दिनों में फिर से हमारे बीच आएगी, और हमें इस बुराई का सामना अब उतनी ही दृढ़ता से करना चाहिए, जितनी दृढ़ता से हमने इसे अपने प्रारंभिक अनुभवों में किया था।

हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज पर खड़े हैं। भविष्यवाणियाँ पूरी हो रही हैं। स्वर्ग की पुस्तकों में विचित्र और घटनापूर्ण इतिहास दर्ज किया जा रहा है—वे घटनाएँ जिनके विषय में घोषित किया गया था कि वे शीघ्र ही परमेश्वर के महान दिन से पहले होंगी। संसार की हर चीज़ अस्थिर स्थिति में है। राष्ट्र क्रोधित हैं, और युद्ध के लिए बड़े पैमाने पर तैयारियाँ की जा रही हैं। राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध, और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़े हो रहे हैं। परमेश्वर का महान दिन अत्यंत शीघ्र आ रहा है। परन्तु, यद्यपि राष्ट्र युद्ध और रक्तपात के लिए अपनी सेनाएँ जुटा

रहे हैं, फिर भी स्वर्गदूतों को दिया गया यह आदेश अब भी प्रभावी है कि वे चारों पवनों को थामे रखें, जब तक कि परमेश्वर के दासों के माथों पर मुहर न लगाई जाए। सेलेक्टेड मैसेजेस, पुस्तक 1, 221.